ISSN : 0975-5756

कला-वैभव
KALA - VAIBHAV

(UGC CARE Listed Journal)

अंक-27 (वर्ष 2020-21)

विभागीय शोध - जर्नल (रेफरीड)



प्रधान संपादक

डॉ. मंगलानंद झा

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ (छ.ग.)

अनुक्रमणिका

शोध–लेख

चित्रकोट (बस्तर) में जैनधर्म का स्वरुप

आराधना चतुर्वेदी

छत्तीसगढ़ प्रदेश के दक्षिण भाग में स्थित बस्तर संभाग ऊँचे घने वनों, विशाल पर्वत श्रेणियों, दुर्गम रास्तों से घिरा हुआ क्षेत्र है। प्राचीनकाल में इस क्षेत्र को दण्डकारण्य, कान्तार, महाकांतार, चित्रकोट, भ्रमरकोट आदि नामों से जाना जाता था। बस्तर में प्राचीनकाल से ही विभिन्न देवी–देवताओं की प्रतिमाओं का निर्माण होता रहा है। इस क्षेत्र से प्राप्त अनेक ब्राह्मण धर्म से सम्बंधित प्रतिमाये जैसे:– शैव, वैष्णव, सौर, शाक्त, गाणपत्य आदि संप्रदायों के प्रतिमाओं की उपलब्धि से यह जानकारी मिलती है कि तत्कालीन समाज में इन सम्प्रदायों को मानने वाले लोग यहाँ रहते थे। इसी क्रम में बस्तर अंचल से बौद्ध तथा जैन धर्मो से सम्बंधित कुछ प्रतिमायें भी प्राप्त हुई है। इसके अलावा यहाँ विभिन्न राजवंशों द्वारा लिखवायें गये अभिलेखों एवं जैन मूर्तियों से भी यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ जैन धर्म का प्रभाव था।1 हालांकि ये प्रतिमायें अत्यल्प मात्रा में ज्ञात हुई है, लेकिन इन प्रतिमाओं के इस क्षेत्र में उपलब्धि से इस बात को भी नाकारा नहीं जा सकता कि यह क्षेत्र बौद्ध एवं जैन धर्मो के प्रभाव में था।

बस्तर के आसपास ओड़िसा क्षेत्र में खारवेल के समय से ही जैन धर्म का प्रभाव स्थापित हो गया था। परन्तु बस्तर में सिर्फ नागवंशी शासक सोमेश्वरदेव ने ही जैन धर्म को संरक्षण दिया। नागवंशी शासकों के अभिलेखों में जैन साधुओं के नाम का उल्लेख मिलता है, इसके अलावा 'जिनग्राम' की चर्चा भी इनकें अभिलेखों में मिलती है। नाग शासक सोमेश्वरदेव की पत्नी धारणमहादेवी के कुरुसपाल अभिलेख में जैन साधु सोमन का नाम मिलता है। इस अभिलेख की तिथि लगभग 1069 अनुमानित है।2 इसके अलावा मधुरांतकदेव के राजपुर ताम्रपत्र3 में भी जैन साधु सहरंग का नाम मिलता है। यह अभिलेख लगभग 1065 ईसवी में उत्कीर्ण की गयी थी। वहीं सोमेश्वरदेव के पुत्र कन्हरदेव के नारायणपाल अभिलेख4 में साधु वकोमोरय और साधु श्रीधर का नाम अंकित है। यह अभिलेख लगभग 1111 ईसवी में लिखी गयी थी। इन अभिलेखों के अनुसार नाग युग में जैन साधु गण समुह बनाकर इस क्षेत्र में निवास करते थे, तथा चैत्य गुहा बनाकर साधना करते थे।

नागवंशी शासक अपने शासनकाल में शैव तथा वैष्णव देवताओं के लिए भूमिदान के अवसर पर जैन साधुओं को साक्षी के रूप में बुलावा भेजते थे, यह तत्कालीन धार्मिक सहिष्णुता को परिलक्षित करता है। जैन धर्म से सम्बंधित प्रतिमाएं लगभग 11वी. शती में निर्मित बस्तर क्षेत्र से यत्र–तत्र बिखरे हुए प्राप्त हुए हैं। बस्तर संभाग से लगभग 14 जैन प्रतिमाएं प्राप्त हुई है। ये प्रतिमायें बस्तर क्षेत्र के गढ़बोदरा, कुरुसपाल, घोटियाद्योता, रेतावंड, बारसूर, केसरपाल, हिड़पाल, कांकेर आदि स्थानों से प्राप्त हुई है।[5]

ऋषभनाथ– बस्तर अंचल में ऋषभनाथ की प्रतिमा रेतावंड से प्राप्त हुई है, जो एक मंदिर में रखी हुई है, यह प्रतिमा द्विभुजी है। ऋषभनाथ को आदिनाथ भी कहा जाता है। जैन ग्रंथो में ऋषभनाथ को जैन धर्म का प्रवर्तक कहा गया गया है। शास्त्रों के अनुसार उनके लांछन वृषभ के साथ उन्हें कदली वृक्ष के नीचे बैठे दर्शाने का निर्देश मिलता है। उनके साथ यक्ष गोमुख, यक्षिणी, चक्रेश्वरी, भारत और बाहुबली को भी अंकित किये जाने चाहिए । शिवपुराण में ऋषभनाथ को शिव का योगावतार बताया गया है।

रेतावंड से प्राप्त इस प्रतिमा के नेत्र अधखुली, घुंघराले केश, लम्बे कर्ण है। ध्यान मुद्रा में पद्मासित देवता के वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है। नीचे वृषभ को भी दिखाया गया है। भारत एवं बाहुबली दोनों पार्श्वो में अंकित है, नीचे दो सिंहों के बीच चक्र प्रदर्शित है। लगभग 11वीं शती. में निर्मित इस प्रतिमा के ऊपर त्रिछत्र पर गज बैठे है, जो

खंडित अवस्था में है। एक और प्रतिमा जगदलपुर के समीप राबर्टसन बिल्डिंग में निर्मित मंदिर में स्थापित है, जिसका शीर्षभाग खंडित है। उनके पार्श्व में अंजनी मुद्रा में सेवक का अंकन किया गया है, जिनका केश, कुंडल, वलय, मेखला आदि आभूषण सुशोभित है। किसी प्रकार का लांछन नहीं है, केवल आसन के नीचे दो सिंहों के मध्य धर्मचक्र का अंकन है, इसी आधार पर वी.डी.झा6 ने इस प्रतिमा को ऋषभनाथ माना है।

कुरुसपाल से प्राप्त काले पत्थर से निर्मित तीर्थंकर ऋषभनाथ पद्मासन मुद्रा में है। वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है, प्रभामंडल, कर्णचाप, कुन्तलित केश है जो कंधे तक फैले हुए है। देवता के दोनों ओर चंवर धारी परिचारक, अभिषेक करते हुए गज एवं त्रिछत्र का अंकन शोभनीय है। उनका ध्वजलांछन वृषभ एवं नीचे एक–एक जिन प्रतिमा को प्रदर्शित किया गया है विपरीत दिशा में दो सिंहों के मध्य चक्र का अंकन भी दिखलाई पड़ता है। दायीं ओर गोमुख यक्ष और बायीं ओर यक्षी चक्रेश्वरी को भी प्रदर्शित किया गया है। यह प्रतिमा लगभग 11वी.शती ईस्वी में निर्मित की गयी होगी।(चित्र कं.–1)

बनियागाँव से प्राप्त ऋषभनाथ की एक प्रतिमा योत्सर्गमुद्रा में अंकित है। सुसज्जित केशविन्यास, कर्णचाप एवं वक्ष स्थल पर श्रीवत्स का अंकन मधुर है। दोनों ओर एक–एक चंवरधारी परिचारक एवं मालाधारी विद्याधार दोनों पार्श्व में प्रदर्शित किये गए है। दो सिंहों के मध्य चक्र के साथ नीचे पादपीठ पर लांछन वृषभ का अंकन है। शास्त्रानुसार दायें पार्श्व में गोमुख और बाएं पार्श्व में यक्षी चक्रेश्वरी भी अंकित है। यह प्रतिमा काले पत्थर पर निर्मित है जो लगभग 12वी. शती ईसवी की है।

पार्श्वनाथ– बस्तर क्षेत्र से पार्श्वनाथ की दो प्रतिमाएं गढ़बोदरा एवं बारसूर से प्राप्त हुई है तथा एक नवीन प्रतिमा हिड़पाल बारसूर से प्राप्त हुई है। पार्श्वनाथ जैन धर्म के तेइसवें तीर्थंकर माने जाते है। पार्श्वनाथ को जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक भी कहा जाता है।7 इनका लांछन सर्प है, प्रतिमा में मस्तक के ऊपर तीन, सात या ग्यारह सर्प फण प्रदर्शित किया गया है, साथ ही उनका यक्ष धर्नेद्र, यक्षिणी पद्मावती तथा चंवरधारी अतिराज को भी दर्शाया गया है।

गढ़बोदरा से मिली लगभग 11वी. शती की प्रतिमा ध्यान मुद्रा में पद्मासित है। सिर पर सप्तफण लिए नागसर्प, लम्बे कर्णचाप तथा कुन्तलित केश सज्जित है। दायें–बांये चंवर धारी धर्नेद्र एवं अतिराज प्रदर्शित है। नीचे परिचारक और ऊपर विद्याधर है। त्रिछत्र का अंकन भी शोभनीय है।(चित्र कं. 2)

पार्श्वनाथ की दूसरी प्रतिमा बारसूर चंद्रादित्य मंदिर संग्रहालय में रखी हुई है। यह प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में है, वक्ष पर श्रीवत्स का अंकन है। देवता के सिर पर सप्त फण लिए हुए नागमौली सुशोभित है, कुन्तलित केश, कर्णचाप, अजानबाहु का भी अंकन किया गया है। पादपीठ पर सिंहों के मध्य चक्र अंकित है। दोनों पार्श्व में दायें धर्नेद्र और बाए अतिराज प्रदर्शित है। दांये पार्श्व में अंजली मुद्रा में हाथ जोड़े सेवक, वितान में त्रिछत्र, दुदुन्भिक माला धारी तथा दो पुष्पों का अंकन दिखलाई पड़ता है। बलुवा पत्थर पर निर्मित लगभग 11वी. शती. की इस प्रतिमा के पीछे नीचे से ऊपर तक सर्प कुण्डलियाँ सुशोभित है। (चित्र कं. 3)

हिड़पाल, जो कि बारसूर के निकट एक छोटा सा वन ग्राम है, से भालू नाला के पास भगवान पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा का पता चला है। यह प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में है। लम्ब कर्णचाप वाले देवता के सिर पर उनके ध्वज लांछन सप्त फण नागमौली सुशोभित है। पीछे सर्प कुण्डलियां देवता के पैरों के नीचे तक दिखलाई पड़ते है। सप्त फण के ऊपर त्रिछत्र का अंकन भी मधुर है। लगभग 11वी. शती. में इस प्रतिमा का निर्माण किया गया है। स्थानीय लोग इस प्रतिमा को विष्णु समझते है।(चित्र कं. 4)

नेमिनाथ– बस्तर के बनिया गाँव से प्राप्त यह प्रतिमा लगभग 12वी. शताब्दी की निर्धारित की गयी है। जैन धर्म के बाइसवें तीर्थंकर के रूप में नेमिनाथ का नाम लिया जाता है। कायोत्सर्ग मुद्रा में अंकित इस प्रतिमा के कुन्तलित केश राशि, लम्बे कर्णचाप तथा वक्ष स्थल पर श्रीवत्स का अंकन मनोरम है। पादपीठ के दोनों पार्श्वो में चंवर धारी सेवक एवं नीचे नेमिनाथ का ध्वज लांछन शंख का अंकन किया गया है। वितान में मालाधारी विद्याधार,

त्रिछत्र, दुन्दभिक, ऊपर पद्मासित जिन एवं अभिषेक करते गजराज सुशोभित है। नीचे दो विपरीत दिशा में मुख किये सिंहों के मध्य चक्र प्रदर्शित है। दायें पार्श्वो में यक्ष गोमेद और बायीं ओर यक्षी अम्बिका का अंकन किया गया है। यह प्रतिमा काले पत्थर पर निर्मित है।

तीर्थंकर प्रतिमा वितान– यह प्रतिमा वितान जगदलपुर बालाजी मंदिर के प्रवेश द्वार में जोड़ा गया है। लगभग 11वी. शती ईसवी की इस प्रतिमा के मस्तक के ऊपर त्रिछत्र, गज एवं पद्मासित जिन की आ.ति उकेरी गयी है।

पद्मावती– पद्मावती, तीर्थंकर पार्श्वनाथ की यक्षिणी है, जिनका सम्बन्ध सर्प से है। पद्मावती के हाथ में पद्म होने के कारण इनका नाम पद्मावती पड़ा। ग्रंथो में पद्मावती के चतुर्भुजी, षडभुजी, अष्टभुजी एवं चौबीस भुजाओं वाली प्रतिमाओं का विवरण मिलता है।

बस्तर में केसरपाल से प्राप्त पद्मावती चतुर्भुजी है, तथा द्विभंग मुद्रा में प्रदर्शित है। इनकी भुजाओं में दण्ड, पताका, पाश, दायाँ हाथ भूमि स्पर्श मुद्रा में है। चेहरे का भाव शांत है, सिर के ऊपर सर्प फणनाग मौली सुशोभित है। बलुआ पत्थर से निर्मित देवी करंड मुकुट धारण किये हुए है, साथ ही ग्रेवेयक, चक्र कुंडल, केयूर वलय, कमर में मेखला एवं पैरो में पायल पहने हुए अंकित है। उनके वक्ष स्थल तक फैली हारावली अत्यंत सुन्दर है। लगभग 12वी.–13वी. शती में निर्मित प्रतिमा के बायीं ओर उनका वाहन कुक्कुट भी दर्शनीय है। वर्तमान में यह प्रतिमा जगदलपुर संग्रहालय में सुरक्षित है।[6] (चित्र क्रं. 5)

अम्बिका– बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथ की यक्षिणी अम्बिका को कहा गया है। ब्राह्मण धर्म की अम्बिका, दुर्गा का ही एक रूप है जिसे जैन धर्म में समाहित कर लिया गया। विभिन्न जैन ग्रंथो में अम्बिका प्रतिमा के लक्षणों का वर्णन मिलता है। बस्तर संभाग में अम्बिका की 5 प्रतिमाएँ प्राप्त हुई है।

मठपाल में भैरव मंदिर से अम्बिका की अपने वाहन सिंह पर बैठी हुई एक प्रतिमा प्राप्त हुई है, देवी के कानो में कुंडल, गले में हार वलय सुशोभित है। देवी दायीं ओर अपने छोटे पुत्र प्रियंकर को गोदी में लिये हुए तथा बायीं ओर बड़े पुत्र शुभंकर को खड़ा प्रदर्शित किया गया है। लगभग 11वी.–12वी. शती. में यह प्रतिमा बलुआ पत्थर पर निर्मित है।

बारसूर के संग्रहालय में रखी अम्बिका की उपरी भुजा खंडित है। ललितासन मुद्रा बैठी देवी चतुर्भुजी है,जो कि अपने हाथो में क्रमशः आम्र गुच्छ, एक प्रकार की गोल वस्तु एवं बायी ओर अपने गोद में प्रियंकर को संभाले हुए प्रदर्शित है। लगभग 11वी.–12वी. शती में निर्मित देवी तत्कालीन आभूषण जैसे चक्र कुंडल, केयूर, मेखला, वलय, ग्रेवेयक, गले में एक लड़ी वाली हार तथा पैरो में नुपुर पहने हुए है।(चित्र क्रं. 6)

बारसूर से ही प्राप्त एक और अम्बिका दो भुजाओं वाली है एक हाथ में आम्र गुच्छ तथा दूसरे हाथ में अपने पुत्र प्रियंकर को पकड़ी हुई है। प्रियंकर की प्रतिमा खंडित है, बायीं ओर शुभंकर को खड़ा किये हुए प्रदर्शित है। देवी का शीर्ष भग्न है तथा तत्कालीन आभूषणों से युक्त है। यह प्रतिमा भी लगभग 11वी.–12वी. शती में निर्मित प्रतीत होती है। (चित्र क्रं. 7)

कांकेर के राजपारा से मिली अम्बिका की प्रतिमा लगभग 10वी.–11वी. शती में निर्मित है। देवी चतुर्भुजी तथा पद्मासित है। बाएं तरफ उपरी हाथ में पाश और नीचे हाथ से प्रियंकर को संभाले हुए है, वही दायें तरफ उपरी हाथ में अंकुश तथा निचले हाथ में आम्र गुच्छ लिए हुए प्रदर्शित है। जैन ग्रन्थ नेमिनाथ चरित्र के अनुसार इस प्रतिमा का निर्माण किया गया प्रतीत होता है।

अम्बिका की एक स्थानक प्रतिमा बारसूर के चंद्रादित्य संग्रहालय में रखी हुई है। प्रतिमा समभंग मुद्रा में खड़ी हुई है। पाद पीठ पर बड़ा पुत्र शुभंकर खड़ा है। द्विभुजी देवी अपने दायीं हाथ में आमफल का गुच्छ और बायीं हाथ अपने छोटे पुत्र प्रियंकर के ऊपर रखे हुए है। लगभग 11वी.–12वी. शती में इस प्रतिमा का निर्माण किया गया है, देवी चक्र कुंडल, ग्रेवेयक वउत्तरीय धारण किये हुए प्रदर्शित है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि 10वी. से 12वी. शताब्दी में इस क्षेत्र में जैन धर्म का प्रभाव रहा होगा।

रायबहादुर हीरालाल शुक्ल के अनुसार अबूझमाड़ क्षेत्र में विस्तृत जैन प्रतिमाएं वहाँ जैन धर्म की प्राचीनता को स्पष्ट करता है। बाद में वहाँ के लोग तांत्रिक प्रवृत्ति के होने के कारण, उनके द्वारा जैन धर्म को शाक्त संप्रदाय में समाहित कर लिया गया।



(1) आदिनाथ (ऋषभनाथ), कुरुसपाल।



(2) पार्श्वनाथ, गढ़बोदरा।



(3) पार्श्वनाथ, बारसूर संग्रहालय।



(4) पार्श्वनाथ, हिडपाल बारसूर।



(5)पद्मावती, केसरपाल।



(6) अम्बिका, बारसूर।



(7) अम्बिका, बारसूर।

सन्दर्भग्रन्थ सूची :-

1. झा, के.के.,– बस्तर में जैन धर्म की प्राचीनता, छ.ग.का जैनशिल्प, 2001, रायपुर, पृष्ठ क्र.45 एपिग्रफिका इंडिका, 9, पृष्ठ क्र. 163।
2. एपिग्रफिका इंडिका, 23अंक, पृष्ट क्र. 174–178।
3. एपिग्रफिका इंडिका, 48अंक, पृष्ट क्र. 311–316।
4. पाठक, नरेश कुमार, बस्तर इतिहास एवं पुरातत्व, रायपुर, 1991, पृष्ठ क्र. 63–66।
5. झा, वी.डी., बस्तर का मूर्तिशिल्प, भोपाल 1989, पृष्ट क्र. 111।
6. उप्रिवत, 112।
7. उप्रिवत, 112।
8. शुक्ल, हीरालाल, आदिवासी सामंतवाद, दिल्ली, 1987, पृष्ट क्र. 127।
9. संलग्न प्रतिमाये स्थल भ्रमण से स्वयं द्वारा अवलोकित।

शोधार्थी,
प्रा.भा.इति., सं. एवं पुरातत्व विभाग,
इ.क.सं.विश्वविद्यालय खैरागढ़।

•••